पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.12.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

# युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

## राजस्थान प्रान्तीय आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन

डा.अनिल आर्य की अध्यक्षता में
रविवार, 4 जनवरी 2015
प्रात: 11 से 2.30 बजे तक
स्थान: बी–67,विनोबाभावे नगर,
वैशाली,जयपुर
–यशपाल यश, संयोजक

वर्ष-31 अंक-14 पौष-2071 दयानन्दाब्द 190 16 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2014 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.12.2014, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

ओ३म्

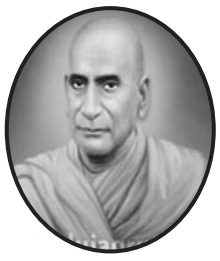

## केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

के तत्वावधान में

स्वतन्त्रता सेनानी, आर्य संन्यासी, समाज सुधारक

## ८८ वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

**मंगलवार, 23 दिसम्बर 2014, प्रात: 10:00 से 1:30 बजे तक**

**स्थान: कॉन्सटिट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली**

(निकट मैट्रो स्टेशन पटेल चौक)

### मुख्य अतिथि:

**डॉ. हर्षवर्धन जी**
(केन्द्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंत्री, भारत सरकार)

**डॉ. जी. एम. सिद्धेश्वरा**
(केन्द्रीय उद्योग मंत्री, भारत सरकार)

**श्री प्रभात झा**
(सांसद व प्रदेश प्रभारी भाजपा)

**श्री सतीश उपाध्याय**
(प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा दिल्ली)

### अध्यक्षता: डॉ. अशोक कुमार चौहान
(संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

### ध्वजारोहण: श्री मायाप्रकाश त्यागी
(कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

### सार्वजनिक अभिनन्दन
### समर्पित व्यक्तित्व, कर्मयोगी डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा

### विशिष्ट अतिथि

**श्रीमती मीनाक्षी लेखी** (संसद सदस्य)
**श्री प्रवेश वर्मा** (संसद सदस्य)
**श्री आनन्द चौहान** (निदेशक ऐमिटी संस्थान)
**श्री सुभाष आर्य** (अध्यक्ष स्थाई समिति)

### मुख्य वक्ता– डॉ. जयेन्द्र आचार्य जी

### गरिमामयी उपस्थिति

**श्री दीनानाथ बत्रा** (रा. सं. शिक्षा बचाओ समिति)
**श्री प्रभात शेखर** (मनोहर लाल ज्वेलर्स)
**श्री सुरेन्द्र कोहली** (सुप्रसिद्ध समाज सेवी)
**श्री नवीन रहेजा** (रहेजा डेवैलपर)
**श्रीमती गायत्री मीना** (प्रधान आर्य समाज नोएडा)
**श्री ओमप्रकाश जैन** (चेयरमैन दिल्ली व्यापार महासंघ)
**श्री दर्शन अग्निहोत्री** (प्रधान वैदिक आश्रम, देहरादून)
**डॉ. रिखबचन्द जैन** (प्रदेश अध्यक्ष विश्व हिन्दु परिषद्)
**श्री राजीव परम** (चेयरमैन परम डेयरी ग्रुप)
**डॉ. डी. के गर्ग** (चेयरमैन ईशॉन इन्स्टीट्यूट)
**श्री रविदेव गुप्ता** (प्रधान दक्षिण दि.वे.प्र.मण्डल)
**श्री प्रदीप तायल** (पाईटैक्स ज्वैलर्स)

## आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

### निवेदक

| डा. अनिल आर्य | भोलानाथ विज | महेन्द्र भाई | सुरेश आर्य |
|---|---|---|---|
| राष्ट्रीय अध्यक्ष | स्वागताध्यक्ष | राष्ट्रीय महामंत्री | राष्ट्रीय मंत्री |
| 9810117464 | 9313138693 | 9013137070 | 9810114455 |

**नोट: कृपया प्रात: 10 से 10:20 बजे तक चाय ग्रहण करें...**

# 'भारत माता के वीर आदर्श सपूत शहीद रामप्रसाद बिस्मिल'

– मनमोहन कुमार आर्य

आज की युवापीढ़ी आधुनिक युग के निर्माता देशभक्तों को भूल चुकी है जिनकी दया, कृपा, त्याग व बलिदान के कारण आज हम स्वतन्त्र वातावरण में सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आज की युवा पीढ़ी प्रायः धर्म, जाति व देश के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति सजग नहीं है वा विमुख है। यह एक आश्चर्य है कि हमें देश-विदेश के क्रिकेट आदि खिलाड़ियों, फिल्मी अभिनेताओं, बड़े-बड़े घोटाले व भ्रष्टाचार करने वाले राजनीतिज्ञों के नाम व कार्यो के बारे में तो ज्ञान है परन्तु जिन लोगों ने देशवासियों को अपमानित जीवन जीने से बचाया है, उन्हें हम भूल चुके हैं। इसे देशवासियों की उन हुतात्मा बलिदानियों के प्रति कृतघ्नता ही कह सकते हैं। ऐसा क्यों हुआ? इसका सरल उत्तर है कि स्वतन्त्रता के बाद देश में जो वातावरण बना और देश भक्ति को शिक्षा पद्धति में अनिवार्य विषयों में सम्मिलित नहीं किया, उसके कारण ही ऐसा हुआ है। आज की युवा पीढ़ी ने स्वदेशी सभी अच्छी चीजों को छोड़ दिया है और पाश्चात्य बुरी चीजों को अविवेकपूर्ण ढंग से अपनाया है व अपनाती जा रही है। ऐसे वातावरण में शहीदों के जन्म व बलिदान दिवस हमें अवसर देते हैं कि हम तत्कालीन परिस्थितियों में उनके द्वारा किए गये कार्यो पर दृष्टिपात कर उनका मूल्यांकन करें व उनसे शिक्षा ग्रहण कर अपना कर्तव्य निर्धारित करें। भारत माता को विदेशी आक्रान्ताओं से, जो देशवासियों को पल-प्रतिपल अपमानित करते थे, हमारा प्राचीन धर्म व संस्कृति जिनके शासन में असुरक्षित थे, देश की सम्पदाओं को लूटते थे, देशवासियों के श्रम का व उनका बौद्धिक शोषण करते थे, जिन्होंने हमारी अस्मिता को अपमान व अज्ञान के अन्धकार से कुचल दिया था, उनसे मुक्त कराने के लिए अपने तन, मन व धन को मातृभूमि की स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अर्पित करने वाले भारत माता के इस महान वीर सपूत का नाम है पं. रामप्रसाद बिस्मिल। शहीद बिस्मिल ने 29 वर्ष की भरी जवानी में 19 दिसम्बर, 1927 को फांसी के फन्दे को चूम कर अपना बलिदान दिया। उनके जीवन पर दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि उनके जीवन का उद्देश्य विदेशी शासक अंग्रेजों की पराधीनता से देश को मुक्त कर सभी देशवासियों के प्राचीन धर्म व संस्कृति की रक्षा, सम्मानजनक जीवन के साथ देश की एकता व अखण्डता की रक्षा करते हुए सबकी शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करना एवं वैदिक आदर्श सत्य व न्याय पर आधारित शासन स्थापित करना था।

रामप्रसाद बिस्मिल के पिता श्री मुरलीधर, चाचा श्री कल्याणमल तथा पितामह श्री नारायणलाल थे। आप चार भाई व पांच बहने थी जिनमें आप सबसे बड़े थे। पिता कुछ शिक्षित थे। ग्वालियर से आकर शाहजहांपुर, संयुक्त प्रान्त में बसे थे। मुरलीधरजी ने पहले नगर पालिका में 15 रूपये मासिक पर सर्विस की और इसके बाद कोर्ट में स्टाम्प पेपर बेचने का काम किया। आपके परिवार में पुत्रियों को जन्म लेते ही मार दिया जाता था परन्तु आपके पिता ने यह कुकृत्य नहीं किया यद्यपि आपके दादाजी का परामर्श था कि पुत्रियों को मारा जाये। रामप्रसाद जी का जन्म 11 जून सन् 1897 को हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दी व उर्दू में हुई। अपनी धर्म परायणा माताजी की प्रेरणा से आपने अंग्रेजी भी सीखी। बचपन में आपको अनेक बुरे व्यस्न लग गये। घर के पास ही आर्य समाज मन्दिर था। वहां जाने लगे। मन्दिर के पण्डितजी ने आपको ब्रह्मचर्य व व्यायाम के बारे में बताया और उसका पालन करने को कहा जिससे आपको सही दिशा मिली। आर्य समाज मन्दिर में आपको श्री इन्द्रजीत जी का सत्संग प्राप्त हुआ। उन्होंने आपको ईश्वर का ध्यान करना व महर्षि दयानन्द रचित सन्ध्या करना सिखाया। उनकी प्रेरणा से आपने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से आपके सारे व्यस्न छूट गये और आपमें देश प्रेम व देश को स्वतन्त्र कराने की भावना उत्पन्न हुई। आपका स्वास्थ्य जो पहले खराब रहता था अब सन्ध्या, व्यायाम व योगाभ्यास से दर्शनीय हो गया। हमें आर्य समाजी मित्र, आर्य विद्वान प्रो. अनूप सिंह से ज्ञात हुआ कि आप अपने भव्य, प्रभावशाली व आकर्षक शरीर के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गये। लोग दूर-दूर से आपकी प्रशंसा सुनकर आपको देखने आने लगे।

पं. रामप्रसाद बिसिल्ल जी को आर्य समाज के सम्पर्क में आने से पूर्व अनेंक दुर्व्यस्न लग गये थे। दुर्व्यस्नों के लिए पैसे चाहिये। इसके लिए वह पिता के पैसे भी चोरी कर लेते थे। दुर्व्सनों को छुपकर किया जाता है, इसलिए अन्यों पर प्रायः यह प्रकट नहीं होते हैं। रामप्रसाद जी धुम्रपान, भांग का सेवन, चरित्र बिगाड़ने वाले उपन्यासों को पढ़ना व निरर्थक घूमना-फिरना व उसमें समय नष्ट करना जैसे लक्ष्य से भटके मनुष्य की भांति कार्य करते थे। रामप्रसाद जी का भाग्योदय हुआ। संयोग से आप आर्य समाज के सम्पर्क में आये। यहां आर्यों की संगति व उनसे मिलने वाले तर्क पूर्ण सुझावों ने आपको प्रभावित करना आरम्भ किया। व्यस्नों से जीवन को होने वाली हानि का स्वरूप आप पर प्रकट होने से उनके प्रति अरूचि हो गई। हमने इस अल्प जीवन में अनेक लोगों को उठते हुए भी देखा है और वेदों व सत्यार्थ प्रकाश पढ़े व दूसरों को सदाचारी व आर्य बनाने वाले को नाना प्रकार के बुरे कार्य करते हुए भी पाया है जिनसे चरित्र का पतन होता है। यह सामान्य बात है, ऐसी घटनायें समाचार पत्रों व टीवी आदि पर भी यदा-कदा देखने को मिलती रहती हैं। रामप्रसाद जी में जो दूषण थे वह अज्ञानता, मन के नियन्त्रित न होने व इन्द्रियों के दास बनने के कारण उत्पन्न हुए थे, उनका दूर होना सरल था। उन्हें इनके दुष्प्रभावों का ज्ञान हुआ तो उन्होंने इसे त्याग दिया और इनके त्याग से आत्मा की शुद्धि प्राप्त करके एक अज्ञात युवा महात्मा बन गये या महात्मा बनने के मार्ग पर तेजी से बढ़ चले।

आर्य समाज में सन्ध्या, हवन, वहां के सच्चरित्र सदस्यों एवं विद्वानों के उपदेशों, उनकी संगति, उनसे वार्तालाप व उनकी सेवा का आप पर ऐसा प्रभाव हुआ कि आर्य समाज में रहकर आप अपना अधिक समय व्यतीत करने लगे। पिता आर्य समाज के वास्तविक स्वरूप से अपरिचित थे। उन्हें अपने पुत्र रामप्रसाद का वहां अधिक समय व्यतीत करना अच्छा नहीं लगता था। इससे वह उनसे क्रुद्ध हो गये। उन्होंने रामप्रसादजी को वहां जाने से मना किया और अपशब्द कहकर धमकी भी दी की सोते समय उसका गला काट देगें। इस कारण घर से भी उन्हें निकाल दिया। इस कठिन परीक्षा को, जिसे छोटी अग्नि परीक्षा भी कह सकते हैं, हमारे पं. रामप्रसाद बिस्मिल पूरी तरह सफल हुए। यदि वह पिता के अनुचित सुझाव को मान लेते तो उनका जीवन निरर्थक होता और इतिहास में जो युगान्तरकारी घटना घटी वह न हुई होती। यहां हम स्वामी श्रद्धानन्द के उदाहरण को भी स्मरण कर सकते हैं जब इस नास्तिक युवा मुंशीराम, बाद में स्वामी श्रद्धानन्द कहलाये, के पौराणिक व अन्धविश्वासों को मानने वाले पिता नानक चन्द बरेली में महर्षि दयानन्द के सत्संग में लेकर जाते हैं, इस आशा के साथ कि स्वामी दयानन्द के सत्संग व उपदेश के प्रभाव से इसकी नास्तिकता समाप्त हो जायेगी। महर्षि दयानन्द के सत्संग से उनकी नास्तिकता भी समाप्त हुई, सारे दुर्व्यस्न भी समाप्त हुए और एक दुर्व्यस्नी युवक आगे चलकर अपने युग का युगपुरूष बन गया जिसका स्मारक गुरूकुल कांगड़ी आज भी अतीत के स्वर्णिम कारनामों को संजोय हुए उनकी साक्षी दे रहा है। लेखक स्वयं भी अपने एक आर्य मित्र श्री धर्मपालसिंह की संगति से सन्, 1970 में अपनी 18-21 वय में आर्य समाज के सम्पर्क में आया था। उस समय उसमें भी ज्ञान न होने कारण अभक्ष्य पदार्थो का सेवन व अन्य कुछ दुर्बलतायें थी जो आर्य समाज के साहित्य के स्वाध्याय, विद्वानों के प्रवचनों व अपने मित्र के नाना विषयों पर वार्तालाप से दूर हुईं थीं।

आपको मुंशी इन्द्रजीत से सत्यार्थ प्रकाश भी पढ़ने को मिला था। सत्यार्थ प्रकाश से आपको ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, धर्म, कर्म, यज्ञ, सन्ध्या, जीवन-मृत्यु के रहस्य, पुनर्जन्म, सुख, दुख, बन्धन, मोक्ष, देश भक्ति, मातृभूमि से प्रेम, उसकी सेवा, माता-पिता-गुरूजनों-सज्जनों-वृद्धों की सेवा, मत-मतान्तरों का वास्तविक ज्ञान व उन सबमें सत्य व असत्य मान्ताओं का मिश्रण, धर्म केवल व केवल एक है जिसमें सर्वांश सत्य होता है, असत्य बिल्कुल नहीं आदि का ज्ञान हुआ एवं मूर्तिपूजादि पोषित पौराणिक वा कथित सनातन धर्म सहित बौद्ध, जैन, नास्तिक मत, ईसाई व इस्लाम मत की अवैदिक व अज्ञानपूर्ण बातों का ज्ञान भी हो गया। इतना ज्ञान होना, इसके धारण की भावना का होना, इनकी इच्छा, संकल्प, प्रयत्न करना व इससे सहमत होना -- यह सब एक महात्मा के लक्षण हैं। रामप्रसाद बिस्मिल भी इसके साक्षी बने व इन्हें अपने जीवन में धारण किया।

आर्य समाज, शाहजहांपुर में एक बार आर्य संन्यासी स्वामी सोमदेव जी का आगमन हुआ। स्वामीजी धार्मिक विद्वान होने के साथ-साथ देश की परतन्त्रता व उसके परिणामों से व्यथित थे। आपको इनका सत्संग प्राप्त हुआ। सत्यार्थ प्रकाश, आर्याभिविनय, संस्कृत वाक्य प्रबोध एवं व्यवहार भानु जैसे ग्रन्थों को पढ़कर देश को आजाद कराने के बीजों का वपन तो आपके हृदय में हो ही चुका था। उनको खाद व पानी स्वामी सोमदेव जी के सत्संग, वार्तालाप व सेवा से प्राप्त हुआ। उनके परामर्श से आपने देश की आजादी के लिए कार्य करने का अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। आर्य मनीषी डा. भवानी लाल भारतीय ने लिखा है कि स्वामी सोमदेव जी की शिक्षाओं से प्रभावित होकर रामप्रसाद बिस्मिल ने प्रतिज्ञा की - 'अंग्रेजी साम्राज्य का नाश करना मेरे जीवन का प्रमुख लक्ष्य होगा।' इस प्रतिज्ञा के बाद आपने युवकों का एक संगठन बनाया। इस संगठन की योजनाओं को पूरा करने के लिए शस्त्रों की आवश्यकता थी और उन्हें खरीदने के धन चाहिये था। आपने धन की प्राप्ति के लिए एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था - 'अमेरिका को स्वतन्त्रता कैसे मिली?' इसकी बिक्री से प्राप्त धन अपर्याप्त था। दूसरा उपाय यह किया कि पास के एक गांव पर सशस्त्र हमला कर धन लूटा गया। यह ध्यान रखा गया कि किसी को भी शारीरिक क्षति नहीं पहुंचानी है। पराधीन भारत माता को आजाद करने के लिए उसी की सन्तानों से धन प्राप्त करने का उस समय उन्हें यही तरीका दिखाई दिया। इस घटना से आप पुलिस की जानकारी में तो आ गये परन्तु गिरिफ्तारी से बचते रहे। सन् 1920 में राजनैतिक कैदियों व अन्य अपराधियों को आम माफी दिये जाने के बाद आपके नाम जारी वारण्ट भी रद्द हो गया। तब आप अज्ञात स्थान से शाहजहांपुर आ गये। जब आपने युवकों का सशस्त्र दल बनाया तो सुप्रसिद्ध देशभक्त, शहीद व आपके अभिन्न मित्र अशफाक उल्ला खां भी आपके सम्पर्क में आये। दोनों में पक्की दोस्ती हो गई। अशफाक को अपने मित्र बिस्मिलजी को बहुत निकट से देखने का अवसर मिला। वह भी आर्य समाज मन्दिर में आने लगे। हम अनुमानतः कह सकते हैं कि उन्होंने आर्य समाज के सत्य स्वरूप को काफी हद तक समझा था। एक बार कुछ मुसलमानों ने आर्य समाज पर आक्रमण कर दिया। अशफाक उल्ला उस समय आर्य समाज मन्दिर में पं. रामप्रसाद बिस्मिल के साथ ही थे। अशफाक ने रामप्रसाद जी के साथ मिलकर आक्रमणकारियों को ललकारा था और उनके मंसूबे विफल कर दिये थे। इस मित्रता को सच्ची मित्रता कह सकते हैं और हिन्दू-मुस्लिम संबंधों की एक अच्छी मिसाल भी। इन दोनों की मित्रता के अनेक प्रसंग हैं, जो प्रेरणाप्रद हैं।

**(शेष अगले अंक में)**

# करनाल में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का प्रान्तीय सम्मेलन सोत्साह सम्पन्न

शनिवार, 13 दिसम्बर 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा का प्रान्तीय कार्यकर्ता सम्मेलन आर्य समाज, सैक्टर–13 करनाल में सोत्साह सम्पन्न हुआ। सभी आर्य जनों ने आर्य समाज के प्रचार कार्य को गति देने व युवा शक्ति को जोड़ने का संकल्प लिया। डा. अनिल आर्य की अपील पर सभी ने दिल्ली आर्य महासम्मेलन को तन, मन, धन से सफल बनाने का आश्वासन दिया। चित्र में आर्य नेता, दानवीर चौ. लाजपतराय आर्य को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, श्री शान्तिप्रकाश आर्य, श्री सतेन्द्रमोहन कुमार (प्रधान, केन्द्रीय सभा, करनाल), संयोजक श्री स्वतन्त्र कुकरेजा, श्री सूर्यदेव व्यायामाचार्य, श्री वीरेन्द्र योगाचार्य (प्रान्तीय महामन्त्री, श्री सतोंष शास्त्री, श्री अजय आर्य, श्री मनोहरलाल चावला (प्रान्तीय अध्यक्ष) स्वामी सच्चिदानन्द जी, श्री हरिचन्द स्नेही, श्री बलबीर आर्य, श्री सुरेन्द्र शास्त्री व श्री अरूण आर्य। श्री रोशन आर्य ने व्यवस्था सम्भाली।

# मेरठ में परिषद् की उत्तर प्रदेश प्रान्तीय बैठक उत्साह पूर्ण सम्पन्न

# पानीपत में सम्पर्क अभियान व टैगोर गार्डन में स्वामी श्रद्धानन्द वाटिका का उद्घाटन

शनिवार, 13 दिसम्बर 2014, दिल्ली आर्य महासम्मेलन की तैयारी के लिये डा. अनिल आर्य पानीपत पहुॅचे। चित्र में जिला अध्यक्ष श्री नवनीत सिंगला ने परिषद् पूरी टीम को ''संस्कार विधि'' की प्रतियां भेंट की। रविवार, 7 दिसम्बर 2014, दक्षिण दिल्ली नगर निगम द्वारा टैगोर गार्डन विस्तार आर्य समाज के सामने वाले पार्क का नामकरण ''स्वामी श्रद्धानन्द वाटिका'' के नाम पर किया गया व साथ वाले विद्यालय में विज्ञान विभाग का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर मंच पर डा.अनिल आर्य,उपायुक्त श्री के.के.दहिया,श्री सुभाष आर्य (अध्यक्ष,स्थाई समिति) व सांसद श्री प्रवेश वर्मा आदि। समाज के प्रधान श्री अशोक आर्य,मंत्री श्री लाजपत आहुजा,श्री रमेश आर्य आदि भी उपस्थित थे।

# अमर कालोनी में संध्या बजाज का स्वागत व गुरूकुल गौतम नगर में यज्ञ का शुभारम्भ

रविवार, 7 दिसम्बर 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की दक्षिण दिल्ली की बैठक आर्य समाज, अमर कालोनी, नई दिल्ली में सोल्लास सम्पन्न हुई। सभी ने आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने का संकल्प लिया। चित्र में समाज सेवी श्रीमती संध्या बजाज का स्वागत करते प्रधान श्री जितेन्द्र डावर, डा.अनिल आर्य, मंत्री श्री ओमप्रकाश छाबड़ा, श्री अनिल हाण्डा, श्रीमती वेदप्रभा बरेजा, प्रि. अर्चना पुष्करना, श्री प्रकाशवीर शास्त्री व श्री कृष्णलाल राणा। द्वितीय चित्र–रविवार, 7 दिसम्बर 2014, दिल्ली के सुप्रसिद्वशिक्षण संस्थान गुरूकुल गौतम नगर में वार्षिक यज्ञ का शुभारम्भ हुआ । समारोह का उद्घाटन श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी ने किया। आचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी, डा. अनिल आर्य, डा.महेश विद्यालंकार, डा. रघुवीर विद्यालंकार, श्री रविदेव गुप्ता, श्री चतरसिंह नागर, श्री विद्यामित्र ठुकराल, श्री प्रियव्रत आर्य आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। संचालन श्री श्रीकान्त शास्त्री ने किया।

## दिल्ली आर्य महासम्मेलन के सन्दर्भ में अपील

सभी आर्य युवकों व आर्य जनों से अपील है कि दिल्ली में होने वाले अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 24,25,26 जनवरी 2015 की तैयारी के लिये अभी से जुट जायें एवं अपने दिल्ली आने की संख्या से हमें अविलम्ब सूचित करें जिससे यथोचित आवास, बिस्तरों आदि का समुचित प्रबन्ध किया जा सके । सभी आर्य युवक पूर्ण गणवेश के साथ शुक्रवार, 23 जनवरी को दोपहर 2 बजे तक समारोह स्थल पर अवश्य पहुॅच जाये । महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई जी को फोनः09968744833, 09013137070 पर सूचित करें। – अनिल आर्य, मो. 9810117464

दिल्ली चलो ओ३म् दिल्ली चलो

# केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 36 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् **डा. अशोक कुमार चौहान** के सानिध्य एवं
युवा वैदिक विद्वान डा. जयेन्द्र आचार्य के ब्रह्मत्व में

## 251 कुण्डीय विराट् यज्ञ एवम्

# अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

## दिनांक : 24, 25, 26 जनवरी 2015 (शनि, रवि व सोमवार)

**स्थान: कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव** (निकट ग्रीन पार्क मैट्रो स्टेशन) **नई दिल्ली-29**

## विराट् शोभा यात्रा: शनिवार 24 जनवरी 2015, प्रात: 10:00 बजे

**शुभारम्भ: कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव, दिल्ली से प्रारम्भ होगी**

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 31 दिसम्बर 2014 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 31 दिसम्बर 2014 तक फोन न: श्री प्रकाश वीर-9811757437, श्री ओम बीर-9868803585, श्री सत्यपाल-9899200447, श्री राणा जी-9868089983 पर आरक्षित करवा लें।

**हज़ारों की संख्या में पहुंचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें।**

## अपील

**इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें**

**कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9868661680**

## राणाप्रताप बाग में संगीत संध्या व श्री प्रेम वोहरा का अमृत महोत्सव सम्पन्न

रविवार, 30 नवम्बर 2014, उतरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री ओम सपरा की अध्यक्षता में आर्य समाज, राणा प्रताप बाग, दिल्ली में श्री अंकित शास्त्री की मधुर संगीत संध्या का आयोजन किया गया। चित्र में मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य के साथ श्री रमेश डावर,श्री वीरेन्द्र आहुजा व श्री रमेश शास्त्री। प्रधान श्री राकेश सखूजा ने सभी का आभार व्यक्त किया। द्वितीय चित्र-शुकवार, 12 दिसम्बर 2014, मित्र संगम पत्रिका के सम्पादक श्री प्रेम वोहरा के अमृत महोत्सव, पंजाबी भवन, नई दिल्ली में अभिनन्दन करते श्री ओम सपरा, डा.अनिल आर्य, श्री कुलदीप सलिल, डा.हरिशंकर विष्ट, श्री बत्रा, श्रीमती प्रतिभा सपरा, श्री वीरेन्द्र जरयाल व श्री सन्दीप आहुजा आदि शुभचिन्तक। श्री ओमप्रकाश त्रेहन, श्री डी.एल.नांरग, श्री हरभजनसिंह सेवक आदि ने कार्यकम को सफल बनाया।

## शोक समाचार

1. डा. जयनारायण शर्मा, झज्जर (श्वसुर श्री महेन्द्र भाई) का गत दिनों निधन।
2. श्री विश्वबन्धु आर्य (पूर्व मन्त्री,आर्य समाज, दीवान हाल, दिल्ली) का गत दिनों निधन।
3. माता विद्यावती सिंगला, पानीपत (माता श्री नवनीत सिंगला) का गत दिनो निधन।

**केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।**

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970